शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक अगुवाई के लिए अनिवार्य तत्व
अध्ययन कुँजी

छोटे समूहों की अगुवाई करना
अध्याय 3: व्यस्कों को सिखाना

परिचय

छोटे समुहों की अगुवाई करना नामक यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल का एक भाग है। इन अध्यायों का उददेश्य विकासशील अगुवों को कौशल व समझ द्वारा तैयाद करना है ताकि वे सफलता पूर्वक छोटे समूहों की अगुवाई कर सकें। छोटा समूह बाइबल अध्ययन या शिष्यता का समूह, या कोई दूसरे प्रकार का लधु समूह हो सकता है जिसे शिष्यता या सेवा के लिए इस्तेमाल किया जाता है। एक छोटे समूह के अगुवे के रूप में तैयार होने से दूसरों को सिखाने की योग्यता में आपको फायदा होगा और साथ ही साथ सभी लोगों को इस काम में बहुत मज़ा आएगा। यह मॉड्यूल वर्तमान काल में कलीसिया की अगुवाई में शामिल लोगों या छोटे समूह के सदस्यों के लिए तैयार किया गया है। कौन जाने कि एक छोटे समूह का सदस्य किसी दूसरे समूह की जिम्मेदारी का कार्य भार सम्भाले।

अध्ययन कुँजी का निमार्ण एक अगुवे के रूप में आपकी सहायता करने के लिए तैयार किया गया है। इन अध्यायों की रूपरेखा को www.dehindi.org पर प्राप्त "शिष्यता के अनिवार्य तत्व की अन्य सामग्री" के साथ उपयोग किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

छोटे समूहों की अगुवाई करना

अध्याय 3: व्यस्कों को सिखाना

यह किस बारे में हैं

इस अध्याय का उददेष्य व्यस्क विद्यार्थियों की अनोखी जरूरतों को ढूंढना और यह पता लगाना है कि उन्हें छोटे समूहों या सेवकाई में किस प्रकार सिखाया जा सकता है।

ताकि आप जान पाएं.....

जब कभी हम अपनी पढ़ाई के बारे में सोचते हैं तो हमें अपना बचपन याद आता है। हम डैस्क में और अधिकतर एक पंक्ति में बैठा करते थे, हमें एक निपुण षिक्षक पढ़ाया करते थे और हम सारे सवाल जवाबों को अपनी कॉपियों में लिखा करते थे। लेकिन जब किसी घरेलू कलीसिया या छोटे समूह में षिक्षा देने की बात आती है तो यह तस्वीर पूरी तरह बदल जाती है। जिस तरह से किसी बालक से ज्ञान, तर्क या आत्म संयम रखने की उम्मीद नहीं की जा सकती है उसी प्रकार किसी व्यस्क से बच्चे की तरह षिक्षा प्राप्त करने की उम्मीद रखना अनहोना है। यह बात किसी को याद दिलाने की जरूरत नहीं है कि व्यस्कों के साथ बच्चों के समान व्यवहार नहीं करना चाहिए। यह अध्याय आपके प्रतिभागियों को पुनःविचार करने के लिए विवष करेगा कि वे किस तरह अपने समूह या कक्षा में षिक्षा प्रदान करते हैं। इस अध्याय को सिखाते समय अपने सभी कामों में एक आदर्ष बने ताकि आपके प्रतिभागी आपके जीवन को देखकर षिक्षा प्राप्त कर सकें। आप उनसे अपने समूह के साथ अपने अच्छे व बुरे दोनों ही प्रकार के अनुभवों को बांटने के लिए कह सकते हैं।

शुरूआत करना

1. एक कहावत है,'आप किसी बूढ़े कुत्ते को नयी चाल नहीं सिखा सकते'। इसका अर्थ है कि किसी भी व्यस्क को नयी बातें सिखाना सम्भव नहीं है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? व्यस्कों के लिए कौन सी चीज़ें बच्चों की तुलना में सीखना आसान होता है? कौन सी बातें बच्चों के लिए सीखना आसान होता है?

2. आपने हाल ही में कौन सी ऐसी बात सीखी जिसे सीखना आपके लिए काफी कठिन था? हो सकता है कि वह आपके कार्यालय के लिए किसी नये उपकरण का इस्तेमाल करना सीखना हो। कौन सी बात आपको किसी नयी चीज़ को सीखने के लिए प्रेरित करती है?

अध्ययन

- **स्कूल का समय खत्मः** जिस प्रकार से हम प्रषिक्षण प्राप्त करने, नौकरी करने, घर गृहस्थी करने, समाज में अपना स्थान लेने के लिए अपने स्कूल के माहौल को पीछे छोड़ देते हैं। बहुत से लोगों के लिए तो यह लम्बी सांस लेने जैसा है। लेकिन कुछ लोग आगे भी अध्ययन जारी रखते हुए अपने आप प्रषिक्षक या षिक्षक बन जाते हैं। लेकिन हम में से बहुत से लोगो के लिए स्कूल से बचपन या जवानी तक ही सम्बन्ध बना रहता है।

  - **पुनः सीखनाः** परमेष्वर का वचन और मसीही जीवन दोनों की षिष्यता पर केन्द्रित हैं। परमेष्वर के ज्ञान में बढ़ने के लिए हम निम्नलिखित तरीकों से पुनः षिक्षा प्राप्त करने के माहौल में प्रवेष करते हैं। क्या आप कुछ तरीकों के बारे में सोच सकते हैं जिसके द्वारा आपने एक मसीही होने के नाते औपचारिक षिक्षाओं को प्राप्त किया?

  - आप साप्ताहिक संदेषों को सुनते होगें, रेडियो में बाइबल अध्ययन को सुनते होगें,या आप किसी छोटे समूह का एक हिस्सा रहे होगें। या हो सकता है कि अब आपको किसी औपचारिक षिक्षा के माहौल में बैठे हुए काफी समय बीत गया हो। व्यस्कों को षिक्षा प्रदान करने में सबसे बड़ी चुनौति यह सामने आती है कि हम उन तरीकों, माहौल व प्रक्रिया का इस्तेमाल नहीं कर सकते जिनका इस्तेमाल स्कूल में किया जाता था। व्यस्क अलग तरीके से सीखते हैं और बच्चों की तुलना में उनके प्रेरणा स्रोत भी अलग होते हैं। गम्भीरता के साथ सीखने वाले छोटे समूह का निर्माण करने के लिए, हमें व्यस्कों की जरूरतों को ध्यान में रखना ज़रूरी है।

    व्यस्कों को निर्देष देना बच्चों को निर्देष देने से किस प्रकार अलग होता हैः बचपन से प्रौढ बनते समय केवल हमारा षरीर ही नहीं बढ़ता है। हमारा दिमाग अर्थात हमारे सोचने का ढंग भी बदलने लगता है।

    1 कुरिन्थियों 13:11 पढ़ें। इस पद के अनुसार हमें बढ़ने के लिए क्या करने की जरूरत है?

    अतः हमें भी व्यस्कों को षिक्षा प्रदान करते समय बच्चों के सिखाने के तरीकों से तौबा करनी चाहिए। छोटे विद्यार्थियों और व्यस्कों में कुछ मुख्य अन्तर होते हैं।

- **सभी व्यस्कों की समझ का स्तर एक सा नहीं होताः** स्कूल के भीतर, बच्चों को उनकी उम्र या स्तर के आधार पर विभाजित कर दिया जाता है। अध्यापक को अन्दाज़ा रहता है कि उसकी कक्षा में आये बच्चों के सीखने क्या क्षमता है और उन्होने अपनी पिछली कक्षा में क्या सीखा होगा। जब व्यस्कों की कक्षा में आने वाले लोगों कोः

  - वर्षों का अनुभव होता है।
  - उस विषय के बारे में ज्ञान होता है, और कई बार तो उन्हें आप से भी ज्यादा ज्ञान होता है।
  - पूर्ण रूप से विकसित ताकत व कमजोरियां होती हैं।
  - उनके पास चीज़ों को सीखने का मुख्य कारण होता है।

सारे व्यस्क एक ही स्तर के नहीं होते, आप अपनी कक्षा में एक षिक्षक होने के नाते इस तथ्य का किस प्रकार फायदा उठा सकते हैं? हमें किसी भी अध्याय की षुरूआत करते समय किन बातों को जानने की आवष्यकता होती है, हम इन बातों को कैसे खोज सकते हैं?

- **उनके पास खोने के लिए कुछ वास्तविक चीजें होती हैं:** व्यस्कों के लिए यह बात स्वीकार करना ही बहुत बड़ी बात होती है कि उन्हें जीवन के इस पढ़ाव पर कुछ सीखने की जरूरत है। किसी कक्षा या छोटे समूह में आकर दूसरे से कहना कि ' मुझे यह नहीं आता'। यह बात किसी भी व्यस्क के लिए कठिन साबित हो सकती है। षर्मिन्दगी महसूस करना एक गम्भीर मामला है। बच्चों को तो पता होता है कि वे सारी बातें नहीं जानते और न ही उनसे ऐसी अपेक्षा ही की जाती है।

  हमें व्यस्कों के लिए एक सुरक्षित षिक्षा को माहौल बनाने के लिए क्या करना चाहिए?

  हर एक प्रतिभागी की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए काम करना चाहिए, और उनके भिन्न विचारों का आदर होना चाहिए। प्रतिभागियों को कभी भी मजाक का पात्र न बनाइये। व्यस्क लोग जल्दी बुरा मान जाते हैं। उन्हें बतायें कि अगर उन्हें किसी क्षेत्र के बारे में कोई जानकारी नहीं है तो शर्मिन्दा होने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि वे यहां सीखने ही तो आए हैं। ऐसे माहौल बनाएं ताकि सारे प्रतिभागी प्रष्न कर सकें, अपनी बातें साझा कर सकें, तथा बिना अपने सम्मान या आदर खोने के डर के अपने जीवन के बारे में बता सकें।

- **उन्हें आदर पाने की जरूरत होती है:** बच्चों की कक्षा में, षिक्षक उम्र में सबसे बढ़ा व्यक्ति होता है इसलिए बच्चे स्वाभाविक तौर पर अपने षिक्षक की बातों को गम्भीरता से सुनते हैं। लेकिन व्यस्कों की कक्षा में सम्भवतः षिक्षक सबसे ज्यादा उम्रदराज़ या समूह में सबसे अधिक षिक्षित व्यक्ति न हो। हो सकता है कि अगुवे को केवल अगुवाई करने के लिए नियुक्त किया गया हो, या उसे केवल सामग्री तैयार करने की जिम्मेदारी दी गयी हो, या उससे किसी विषेष विषय की खोज करने के लिए कहा गया हो। इसलिए प्रोढ़ प्रतिभागी का षिक्षक के समान ही आदर किया जाना चाहिए। एक अध्यापक को::
  - कक्षा में पारस्परिक आदर देने प्रदान करने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए।
  - प्रतिभागियों को अपने अनुभवों से बताने, चर्चा करने और सकारात्मक सहयोग देने के लिए कहना चाहिए।
  - प्रत्येक प्रतिभागी को उनकी ताकत,अनुभव तथा वरदानों के क्षेत्र में प्रोत्साहित करें।
  - अपना समय व्यर्थ न गवाएं। आप तैयारी के साथ आयें और दिये गये समय में तक ही सीमित रहें।
  - ऐसा दिखाने का प्रयास न करें कि आप अपने विद्यार्थियों से नैतिक, आत्मिक या ज्ञान के क्षेत्र में उनसे ज्यादा जानते हैं।
  - आपको केवल कुछ समय के लिए एक अगुवाई का पद सौंपा गया है।

  हम किन तरीकों से अपने विद्यार्थियों से आदर प्राप्त कर सकते हैं? कौन से वे महत्वपूर्ण तरीके हैं जिनके द्वारा हम बदले में अपने विद्यार्थियों को आदर प्रदान कर सकते हैं?(इसके अर्न्तगत समूह में विद्यमान सभी विद्यार्थियों की संस्कृति का सम्मान करना भी षामिल है)

- **वे आत्म–प्रेरित व आत्म–निर्देषित होते हैं:** बच्चों बहुत सी चीजों को सीखने के लिए जिज्ञासु होते हैं लेकिन उन सभी में अपने आप सीखने की प्रेरणा नहीं होती। लेकिन बढ़े होने पर हम लोग आत्म–निर्देषित व प्रेरित हो जाते हैं। आपके समूह में आये व्यस्क सम्भवतः बाइबल को अधिक गहराई से समझने, और मसीही विष्वास में बढ़ने के लिए आये हों। ऐसा जरूरी नहीं है कि कोई उन्हें सदैव की प्रतिभागिता निभाने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

  - आप अपने छोटे समूह की एक साथ विताने वाले समय के लिए लक्ष्य निर्धारित करने में कैसे सहायता करेगें?

  - किस तरह से आप अपने विद्यार्थी को स्वाधीन तरीके से सीखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं?

- **उनके लिए देखना जरूरी है कि यह ज्ञान उनके जीवन से जुड़ा है:** बच्चे अलग अलग बातों को सीखने के आदी बन जाते है, और ज्यादातर लोग इस उम्र में ऐसा ही करते हैं। वे कभी यह नहीं पूछते कि इन सारी चीजों को सीखने से हमें क्या फायदा होगा। बच्चे जानते हैं कि उन्हे सबकुछ पता नहीं है! लेकिन व्यस्क लोग केवल उन क्षेत्रों में षिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं जहां उन्हें कोई दिक्कत महसूस होती है। उनके लिए यह जानना जरूरी है कि आज हमारी विषय वस्तु उनके जीवन से किस प्रकार ताल्लुक रखती है।

  सुझाव में निम्नलिखित बातें षामिल हैं:

  - सभा का प्रारम्भ सभा के उददेष्य, चर्चा करने वाले विषय को बताने के द्वारा करें।
  - वर्णन करें कि आज सिखाई जाने वाली षिक्षा किस प्रकार उनके जीवन को परिवर्तित करने जा रही है।
  - बाइबल के चरित्रों के जीवन से मिलने वाली षिक्षाओं के बारे में चर्चा करें।
  - सामूहिक चर्चा को प्रोत्साहन दें।
  - किसी भी विषय का अध्ययन करने के बाद अपने वास्तविक जीवन में उन आत्मिक सच्चाईयों को अभ्यास करने का प्रयास करें।
  - विष्वास अर्जित करने वाली घटनाओं से उनकी जुड़ने में सहायता करें।

आप रचनात्मक ढंग से किस प्रकार प्रगट कर सकते हैं कि यह ज्ञान हमारे जीवन से जुड़ा हुआ है। (कुछ ऐसे तरीकों के बारे में विचार करें जिसके द्वारा प्रतिभागी हाल ही में सीखी गयी षिक्षाओं का तुरन्त अभ्यास कर सकें।)

❖ व्यस्क किस तरह अच्छे से सीख पाते हैं: **हर**एक व्यक्ति अनोखा और अलग होता है, और एक छोटे समूह के अगुवे से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह सभी लोगों को प्राथमिकता प्रदान कर सके, अतः कुछ ऐसी ध्यान देने योग्य बातें हैं जिन्हें हम वयस्कों को षिक्षा देने हेतू आदर्ष माहौल बनाने के सम्बन्ध में सम्बोधित कर सकते हैं।

- **व्यस्क कारण जानने पर सीखते हैं:** एक व्यस्क होने के नाते हमारा समय बहुत कीमती होता है। जब भी कभी हम किसी लघु सभा में होते हैं, तो हमें वहां होने की एक वजह बतायी जाती है। कोई ऐसा कारण जिसके लिए हम अपना समय निकालते या फिर अपने बच्चों की देखभाल करने का इन्तेज़ाम करते हैं। व्यस्कों को यह पता होना जरूरी है कि वे असल में वहां क्यों हैं, और उन्हें उनके वहां रूकने का परिणाम भी नजर आना चाहिए। वे पूछ सकते हैं कि ''यह मेरे लिए कैसे महत्वपूर्ण है? या '' इससे किस प्रकार मेरे जीवन में सुधार आएगा?'' यदि व्यस्कों को वजह पता चल जाये तो वे उस चीज़ के बारे में जानने के लिए अति उत्सुक हो जाते हैं।
- **व्यस्क तब सीखते हैं जब वे उसे अपने तरीके से सीख सकें:** व्यस्कों को सीखने के बहुत से तरीकों के बारे में बताएं। उन्हें अपने आप सुनने, देखने, और अभ्यास करने का विकल्प दिया जा सकता है। वे समझ सकते हैं कि कौन सा तरीका उनके लिए सहज रहेगा, और उन्हे ऐसा करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।

- **व्यस्क दूसरों के अनुभवों से सीखना पसन्द करते हैं:** व्यस्कों को आजकल लिखित षिक्षाओं की आदत पड़ गयी है, और ज्यादातर लोग पुस्तकों से जानकारियों को संचित करना पसन्द करते हैं। उन्होंने जो कुछ अभी तक सीखा है उसे अनुभव करने की अनुमति दें या चर्चा तथा नाटकों के द्वारा समस्याओं का समाधान करने का परिक्षण करने दें। आत्मिक सच्चाईयों को सिखाते समय कहानियों तथा वास्तविक गवाहियों का इस्तेमाल करने से लोगों को अपने आप सत्यों का अनुभव करने में सहायता मिलेगी।

- **व्यस्क प्रोत्साहित करने वाले माहौल में सीखते हैं:** व्यस्क मजाक बनाने वाले, अनुषासित या डराने वाले माहौल में नहीं सीख पाते। यदि व्यस्कों को उनके ज्ञान के अभाव के कारण निन्दित किया जाता है, तो वे या तो उस समूह में वापस नहीं आयेगें या वे कभी भी ईमानदारी के साथ कोई जवाब नहीं देगें। जब आपका माहौल सकारात्मक, प्रोत्साहित करने वाला, स्वीकार करने वाला, और प्रेम करने वाला होता है तो प्रतिभागी सीखने तथा एक दूसरे की सीखने में सहायता करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।
- **व्यस्क अभ्यास करने का चुनाव होने पर सीखते हैं:** सीखने का एक महत्वपूर्ण भाग विकल्प या चुनाव करना है। विद्यार्थी सीखी गयी बातों का चुनाव करने पर बेहतर ढंग से सीख पाते हैं। आप अपने समूह के लोगों को एक विषय, पुस्तक या इस श्रृंखला की अगली षिक्षा दें। हो सकता है कि आपके विद्यार्थी के पास आपसे भी बेहतर विचार हो। ऐसा करने से कक्षा प्रेरक स्तर हमेषा उच्च रहेगा।

- **व्यस्कों को षिक्षा देने में षिक्षक की भूमिका:** व्यस्कों को षिक्षा देने के मामले में षिक्षकों की भूमिका बच्चों को षिक्षा देने से बिल्कुल भिन्न है। यहां पर सिद्ध नहीं परन्तु विषेष विषय की खोज करने वाला और तैयारी करने वाला होना ज़रूरी है। अध्यापक को विद्यार्थियों के सम्बन्ध में कोई अनुमान नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि किसी प्रतिभागी ने विषय वस्तु को पहले पढ़ा हो और किसी को इस

विषय में बिल्कुल भी जानकारी न हो। इस स्थिति में नम्र बने रहना तथा यह जानना बुद्धिमानी है कि आपकी भूमिका विद्यार्थियों के लिए हर सम्भव व उत्तम तरीकों से परमेष्वर के सत्य की खोज करने में सहायता करने की है।

साराषं

- व्यस्क बहुत से कारणों से षिक्षा की ओर वापस आते हैं, लेकिन वे मौखिक तौर पर षिक्षा प्राप्त कने की तुलना में लिखित षिक्षा पद्धति को ज्यादा पसन्द करते है।
- सीखने के मामले में व्यस्क बच्चों से बिल्कुल अलग होते हैं। वे सभी ज्ञान के क्षेत्र में एक ही स्तर के नहीं होते, उनकी अपनी प्रतिष्ठा होती है जिसको सुरक्षित रखना बहुत जरूरी होता है, उनका व्यक्तित्व आदर की मांग करता है, वे सीखने के लिए आत्म–प्रेरित होते हैं, और अपने आप सीख सकते हैं। उनके लिए यह भी जानना बहुत ज़रूरी होता है कि जो ज्ञान वे प्राप्त कर रहे हैं वह उनके जीवन से किस प्रकार जुड़ा है।
- व्यस्क अपने सीखने की वजह जानने पर तथा यह जानने पर कि वे इस षिक्षा को अपने जीवन में अभ्यास कर सकते हैं तो वे और भी अच्छी तरह सीखते हैं।
- व्यसकों की षिक्षा के माहौल में षिक्षकों की भूमिका एक उपलब्धकर्ता की होती है। अपने विद्यार्थियों को सिखाते समय उन्हे नम्र बने रहने की जरूरत होती है।

चिन्तन करें

1. यदि आप किसी छोटे समूह को षिक्षा दे रहे हैं, तो आप किस तरह से सामुहिक रूप बिताए जाने वाले समय में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारियों या षिक्षाओं को कैसे समावेषित कर सकते हैं?

2. व्यस्कों के षिक्षक को नम्र होना क्यों ज़रूरी है?